# हिंदी विभाग

विभागीय संपादक

**प्रा. बाळासाहेब शेटे**

**प्रा. रोहिणी डावरे**

## वाणिज्य महोत्सव

उद्घाटन करतांना मा.आ.वैभवराव पिचड

बुलेटीनचे प्रकाशन करतांना मा.उत्कर्षाताई रुपवते

खंडोबा माळ, अकोले येथील मुकबधीर विद्यालयातील विद्यार्थ्यांना सहभोजन व शालेपयोगी साहित्याचे वाटप

मार्गदर्शन करतांना डावीकडून मा. सतिष देशपांडे (संपादक, सत्याग्रही विचारधारा मासिक,पुणे), मा. विनायक वाडेकर (अध्यक्ष,संगम ग्राहम मंच,संगमनेर), मा.यशवंतराव आभाळे (सेक्रेटरी.अ.ता.ए.सो.,अकोले), प्रा. सचिन पाळंदे (वाणिज्य विभाग प्रमुख)

मार्गदर्शन करतांना डावीकडून प्रा.डॉ. महेजबीन सय्यद, मा. अखिलेशकुमार (व्यवस्थापक,बँक ऑफ महाराष्ट्र,अकोले), मा.मधुकरराव सोनवणे (सदस्य,अ.ता.ए.सो.,अकोले) मा. राणी वर्पे (व्यवस्थापक, एस.टी.आगार,अकोले)

मार्गदर्शन करतांना डावीकडून उद्योजक श्रीकांत बाहेती (उद्योजक,सोलापूर), मा.राज औटे (सी.ए. सक्सेस अॅकेडमी, पुणे), मा.श्रीनिवास वाणी (विभागीय व्यवस्थापक, एल.आय.सी., अकोले), मा.प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे

विद्यार्थी स्पर्धा: प्रश्न मंजूषा

पोस्टर प्रेझेंटेशन

पेपर प्रेझेंटेशन

'वन मिनीट शो'

'मिस्टर कॉमर्स' व 'मिस कॉमर्स' स्पर्धा विजेते निखिल जगताप व कु. गीतांजली हासे

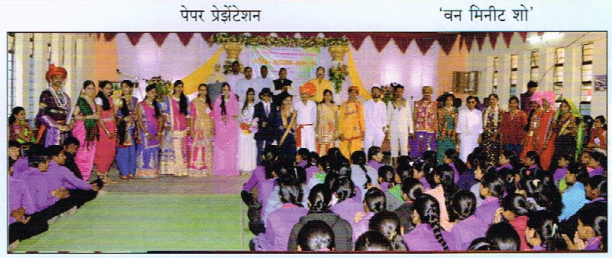

ट्रॅडीशनल रॅम्पवॉक

## विविध गुणदर्शन - कनिष्ठ महाविद्यालय

विद्यार्थ्यांचे कौतुक करतांना ॲड.सौ. अपर्णाताई तिर्थकर

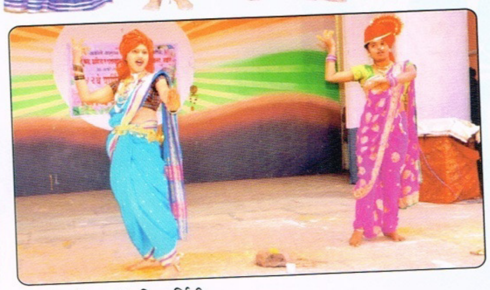

समूहनृत्य व विविध गुणदर्शन सादर करतांना विद्यार्थी-विद्यार्थिनी

## विविध गुणदर्शन - वरिष्ठ महाविद्यालय

श्री गणेश आराधनाः कु.सुनयना देशमुख, कु.प्रिती राऊत    लावणी नृत्यः सुगंधा देशमुख    बगः प्रणव सहाणे    राजस्थानी नृत्य : कु. भक्ती कोळपकर

समूहनृत्य सादर करताना विद्यार्थी-विद्यार्थिनी

गणेश आराधना सादर करताना विद्यार्थी

'रंग जीवनाचे' कार्यक्रमात प्रा.गोपाल बूब

## तीन अंकी नाटक – 'वस्त्रहरण'

नाटकातील काही बोलके प्रसंग

## पारितोषिक वितरण समारंभ

४२ व्या पारितोषिक वितरण समारंभात दीप प्रज्वलन करतांना 'गाढवाचं लग्न' फेम अभिनेत्री मा. राजश्री लांडगे

पारितोषिक प्राप्त विद्यार्थ्यांचे कौतुक व मार्गदर्शन करताना मा.आमदार वैभवराव पिचड

अभिनेते प्रतिक जंजीरे यांचा सत्कार करताना प्रा.डॉ. अशोक दातीर

विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करताना मा. राजश्री लांडगे

कनिष्ठ महाविद्यालयाचा वार्षिक अहवाल सादर करतांना
विद्यार्थी जनरल सेक्रेटरी कु. पूजा आभाळे

वरिष्ठ महाविद्यालयाचा वार्षिक अहवाल सादर करताना
विद्यापीठ प्रतिनिधी कल्पित शिंदे

विद्यार्थ्यांना पारितोषिक वितरण करतांना प्रमुख पाहुण्या मा.राजश्री लांडगे

कु. पूजा चौधरी हिस 'स्टुडंट ऑफ दी ईअर' पारितोषिकाने
सन्मानीत करताना प्रमुख पाहुण्या मा.राजश्री लांडगे

बॉर्डरवर कार्यरत जवान वाकचौरे मयुर च्या वतीने त्यांच्या मातोश्री
पुरस्कार स्विकारताना

'उत्कृष्ट कर्मचारी २०१५-१६' सन्मान स्विकारताना श्री.अशोक वामन

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाचे 'कै. वा.सी. बेंद्रे सुवर्णपदक'
घोषित झाल्याबद्दल सन्मानचिन्ह स्विकारतांना प्रा.डॉ. किरण जाधव

## वाईन टेक्नॉलॉजी विभाग

द्राक्ष बागाईतदार अ‍ॅड. बाळासाहेब सहाणे (प्रोप्रायटर वाईन प्रोसेसिंग) रा. चिकणी, ता. संगमनेर, विद्यार्थ्यांना 'वाईन टेक्नॉलॉजी क्षेत्रातील भविष्यातील संधी' या विषयावर मार्गदर्शन करताना

सह्याद्री अ‍ॅग्रो इंडस्ट्रीज अ‍ॅण्ड फुड्स प्रा.लि.,अकोले येथे विद्यार्थ्यांची शैक्षणिक भेट

व्ही.पी. फुड्सचे प्रोप्रायटर श्री. राजेश पाडेकर विद्यार्थ्यांना प्रकल्पाविषयी माहिती देताना

## पुस्तक प्रदर्शन

महाविद्यालयामध्ये भरविण्यात आलेल्या पुस्तक प्रदर्शनास विद्यार्थ्यांचा भरघोस प्रतिसाद

## पालक मेळावा

इयत्ता ११ वी विज्ञान वर्गाचा पालक मेळावा
मार्गदर्शन करतांना संस्थेचे अध्यक्ष मा.जे.डी. आंबरे पाटील

इयत्ता १२ वी विज्ञान वर्गाचा पालक मेळावा
मार्गदर्शन करतांना उपप्राचार्य पी. आर. जगताप

इयत्ता १२ वी विज्ञान वर्गाचा पालक मेळावा
मनोगत व्यक्त करताना पालक श्री. शिवाजीराव नेहे

इयत्ता १२ वी विज्ञान वर्गाचा पालक मेळावा
उपस्थित पालक

## प्रवेश परीक्षा विभाग

MHT-CET वर्गाच्या सदिच्छा समारंभ प्रसंगी मार्गदर्शन करताना संस्थेचे
अध्यक्ष मा.जे.डी. आंबरे पाटील

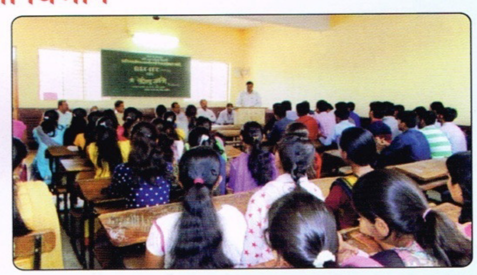

MHT-CET वर्गाच्या सदिच्छा समारंभ प्रसंगी वार्षिक आढावा सादर करताना
विभाग प्रमुख प्रा. विवेक वाकचौरे

## वैद्यकीय शिक्षण मदतनिधी

इयत्ता १२ वी विज्ञान वर्गातील संकेत गडाख यास
वैद्यकीय शिक्षणाकरिता 'डिपर', पुणे या संस्थेतर्फे वार्षिक समारंभात
रु. ६१ हजार वैद्यकीय शिक्षण शिष्यवृत्ती प्रदान करण्यात आली

महाविद्यालय स्नेहसंमेलनप्रसंगी इयत्ता १२ वी विज्ञान वर्गातील संकेत गडाख यास
संस्था, महाविद्यालय, शिक्षक शिक्षकेतर कर्मचारी व माजी विद्यार्थी यांचे वतीने
रु. ६४ हजार वैद्यकीय शिक्षणाकरीता मदत निधी प्रदान करतांना प्रमुख पाहुणे व मान्यवर

## एच.एस.सी. बोर्ड परीक्षा मार्च २०१६ - गुणवंत विद्यार्थी

विज्ञान शाखा

महाविद्यालयात प्रथम
कु.स्नेहल संपत चौधरी (८९.३८%)
सत्कार स्विकारतांना.

वाणिज्य शाखा

महाविद्यालयात प्रथम
कु. चासकर पुष्पलता नामदेव (८०.४६%)
सत्कार स्विकारतांना.

कला शाखा

महाविद्यालयात प्रथम
नाईकवाडी प्रविण गोरक्ष (७८.१५%)
सत्कार स्विकारतांना.

## शिक्षक दिन

स्वच्छता व वृक्षारोपण करून अनोख्या
पद्धतीने शिक्षकदिन साजरा करताना विद्यार्थिनी व प्राध्यापक

## विद्यार्थी सहकारी ग्राहक भांडार

महाविद्यालयाच्या विद्यार्थी ग्राहक भांडाराचे
संचालक मंडळ

## सेवानिवृत्त प्राचार्य

**प्रा. रमेशचंद्र खांडगे**
(प्राचार्य व विभाग प्रमुख, इंग्रजी विभाग)
सेवानिवृत्ती दि. १९/०१/२०१६

## सेवानिवृत्त शिक्षक व शिक्षकेतर कर्मचारी

प्रा.डॉ.सौ. अकीला शेख
(विभाग प्रमुख, हिंदी विभाग)
सेवानिवृत्ती दि. ३१/०८/२०१५

प्रा. संजय पगारे
(सहयोगी प्राध्यापक, इंग्रजी विभाग)
सेवानिवृत्ती दि. ३१/१२/२०१५

श्री. मारुती बोडके
(ग्रंथालय लिपीक)
सेवानिवृत्ती दि. ३१/०१/२०१६

## आमचा मान, आमचा सन्मान !

### पीएच.डी. प्राप्त प्राध्यापक

प्रा.डॉ. महेजबीन सय्यद

प्रा.डॉ. सुरींदर वावळे

प्रा.डॉ. सुनील मोहटे

प्रा.डॉ. सुनील घनकुटे

श्री. डॉ. प्रविण घुले

### नेट – सेट परीक्षा उत्तीर्ण प्राध्यापक

प्रा. राहूल पंचम (नेट)

प्रा.डॉ. सुनील मोहटे (सेट)

प्रा.डॉ. नितीन आरोटे (सेट)

प्रा.डॉ. विजय काळे (सेट)

प्रा. निलेश गावडे (सेट)

श्री. सचिन दोरगे (सेट)

प्रा. शांताराम मधे (सेट)

प्रा. विलास भांगरे (सेट)

प्रा. अरुण वाकचौरे (सेट)

### विशेष अर्हताप्राप्त शिक्षकेतर कर्मचारी

श्री. संजय फटांगरे (बी.लिब.)
ग्रंथालय परिचर

श्रीमती मीरा पराड (बी.ए.)
शिपाई

सौ. शैलजा शेवाळे (बी.लिब.)
शिपाई

# अब्दुल कलाम

**बागवान जुबेर एजाज**
एफ.वाय.बी.कॉम

| | |
|---|---|
| नाम | - अब्दुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन कलाम |
| अन्यनाम | - मिसाईल मैन |
| जन्म | - १५ अक्टूबर १९३१ |
| आयु | - ८४ वर्ष |
| जन्मभूमि | - रामेश्वरम, तामिलनाडू |
| मृत्यु | - २७ जुलाई २०१५ |
| मृत्युस्थान | - शिलांग, मेघालय |
| पिताजी | - जैनुल्लाब्दीन |
| प्रसिद्धी | - भारतीय मिसाइल कार्यक्रम के जनक |
| पद | - भारत के ११ वे राष्ट्रपती |
| कार्यकाल | - २५ जुलाई, २००२ से २५ जुलाई २००७ |
| शिक्षा | स्नातक |
| विद्यालय | - मद्रास इंस्टीट्युट ऑफ टेक्नॉलॉजी |
| भाषा | - हिन्दी, अंग्रेजी, तामिल |
| पुरस्कार | - भारतरत्न (१९९७), पदमविभूषण (१९९०), पदम भूषण (१९८१), इंदीरागांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार एवं देश- विदेशी कई विश्वविद्यालयों में से मानद डॉक्टरेट उपाधि. |
| पुस्तकें | - विंग्स ऑफ फायर, इंडिया २०१०-ए विजन ऑफ द न्यू मिलेनियम, भारत की आवाज, टर्निंग पॉइंटस, हम होंगे कामयाब. |

अब्दुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन कलाम जिन्हें डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नाम से जाना जाता है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अभियंता के रुप में विख्यात है। इनका राष्ट्रपति कार्यकाल २५ जुलाई २००२ से २५ जुलाई २००७ तक रहा है। इन्हें मिसाईल मैन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक गैर राजनीतिक व्यक्ति रहे हैं। विज्ञान की दुनिया में चमत्कारिक प्रदर्शन के कारण ही राष्ट्रपति भवन के व्दार इनके लिए स्वतः खुल गए। जो व्यक्ति किसी क्षेत्र विशेष में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है, उसके लिए सब सहज हो जाता है और कुछ ही दुर्लभ नहीं रहता। अब्दुल कलाम इस उदाहरण का प्रतिनिधित्व करते नजर आते हैं। इन्होंने विवाह नहीं किया है। इनकी जीवन कथा किसी रोचक उपन्यास के नायक की कथा से कम नहीं है। चमत्कारिक प्रतिभा के धनी अब्दुल कलाम का व्यक्तित्व इतना उन्नत है कि, वह सभी धर्म, जाति एवं सम्प्रदायों के व्यक्तित्व में उन्नत व्यक्ति नजर आते हैं। यह एक ऐसे भारतीय हैं, जो सभी के लिए एक महान आदर्श बन चुके हैं। विज्ञान की दुनिया से देश का प्रथम नागरिक बनना कल्पना मात्र नहीं है क्योंकी यह एक जीवित प्रणेता की सत्यकथा है।

**जीवन परिचय –**

रामेश्वरम का प्राकृतिक सौंदर्य समुद्र की समीपता के कारण सदैव बहुत दर्शनीय रहा है। इनके पिता, जैनुल्लाब्दीन न तो जादा पढे लिखे थे, न ही पैसे वाले थे, और नियम के बहुत पक्के थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। इनके संबंध रामेश्वरम के हिंदु नेताओं तथा अध्यापकों के साथ काफी स्नेहपूर्ण थे। अब्दुल कलाम ने अपनी आरंभिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार बेचने का कार्य भी किया था।

अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। परिवार की सदस्य संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि यह स्वयं पाँच भाई एवं पाँच बहन थे और घर में तीन झूले देखने के अभ्यस्त थे। इनकी दादी माँ एवं माँ व्दारा ही पूरे परिवार की परवरिश की जाती थी। घर के वातावरण में प्रसन्नता और वेदना दोनों का वास था। इनके घर इनकी माँ बहुत लोंगो का खाना बनाती थी क्योंकि घर में तीन भरे-पूरे परिवार के साथ-साथ बाहर के लोग भी उनके साथ खाना खाते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर उनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले ही पढ़े लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए। अब्दुल कलाम के पिता पाँचों वक्त की नमाज पढते थे।

**जीवन की एक घटना –**

अब्दुल कलाम के जीवन की एक घटना है कि यह भाई-

बहनों के साथ खाना खा रहे थे। इनके यहाँ धान खूब पकता था। इसलिए खाने में वही दिया जाता था। रोटियाँ कम मिलती थी। जब इनकी माँ ने इनको रोटियाँ जादा दे दी, तो इनके भाई ने बड़े सच का खुलासा किया। इनके भाई ने अलग ले जाकर उनसे कहा कि, माँ के लिए एक भी रोटी नहीं बची और उन्होंने तुम्हें ज्यादा रोटियाँ दे दी। वह बहुत कठीन समय था और उनके भाई चाहते थे कि अब्दुल कलाम जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार करें। तब यह अपने जज़्बातों पर काबू नहीं पा सके और दौड़कर माँ के गले से जा लगे। इन्हें परिवार में सबसे अधिक स्नेह प्राप्त हुआ क्योंकि यह परिवार में सबसे छोटे थे। तब घरों में बिजली नहीं थी और केरोसिन तेल के दीपक जला करते थे, जिनका समय रात्रि ७ से ९ तक नियत था। लेकिन कलाम अपनी माता के अतिरिक्त स्नेह के कारण पढाई करने हेतु रात के ११ बजे तक दीपक का उपयोग करते थे। अब्दुल कलाम के जीवन में इनकी माता का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इनकी माता ने ९२ वर्ष की उम्र पाई। वह प्रेम, दया और स्नेह की प्रतिमूर्ति थी। उनका स्वभाव बेहद शौकीन था। इनकी माता ५ समय की नमाज अदा करतीं थी जब नमाज पढ़ते हुए अब्दुल कलाम दिखते थे तो उन्हें रुहानी सकुन और प्रेरणा प्राप्त होती थी।

जिस घर में अब्दुल कलाम का जन्म हुआ वह आज के रामेश्वरम में मस्जिद मार्ग पर स्थित है। उनके साथ ही इनके भाई की कलाकृतियों की दुकान भी संलग्न है। यहाँ पर्यटक इसी कारण खिंचे चले आते हैं। १९६४ में ३३ वर्ष की उम्र में डॉ. अब्दुल कलाम ने जल की भयानक विनाशलीला देखी और जल की शक्ति का वास्तविक अनुमान लगाया। चक्रवाती तूफान में अब्दुल कलाम का पुश्तैनी गाँव धनुषकोडी भी बह गया था। जब यह १९ वर्ष के थे तब व्दितीय विश्व युद्ध की विभीषिका को भी महसुस किया।

**विद्यार्थी जीवन –**

अब्दुल कलाम जब ८-९ साल के थे, तब से सुबह ४ बजे उठते थे और स्नान करने के बाद गणित के अध्यापक स्वामी अय्यर के पास गणित पढ़ने चले जाते थे। स्वामी अय्यर की यह विशेषता थी जो विद्यार्थी स्नान करके नहीं आता था वह उसे नहीं पढाते थे। स्वामी अय्यर एक अनोखे अध्यापक थे और पाँच विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष निःशुल्क ट्युशन पढाते थे। इनकी माता उन्हें उठाकर स्नान कराती थी और नाश्ता करवाकर ट्युशन पढ़ने भेज देती थीं। अब्दुल कलाम ट्युशन पढ़कर साडे पाँच बजे वापस आते थे। उसके बाद अपने पिता के साथ नमाज पढ़ते थे। इसके पश्चात अब्दुल कलाम रामेश्वरम के रेल्वे स्टेशन और बस अड्डे पर जाकर समाचार पत्र एकत्र करते थे। इस प्रकार इन्हे ३ कि.मी. जाना पडता था। अब्दुल कलाम अखबार लेने के बाद रामेश्वरम शहर की सड़कों पर दौड़-दौड़कर सबसे पहले उसका वितरण करते थे। अब्दुल कलाम अखबार का वितरण कर प्रति दिन प्रातः ८ बजे घर लौट आते थे। इनकी माता अन्य बच्चों की तुलना में इन्हें अच्छा नाश्ता देती थी, क्योंकि यह पढ़ाई और धनार्जन दोनों कार्य करते थे।

अध्यापकों के संबंध में अब्दुल कलाम काफी खुश किस्मत थे। इन्हें शिक्षण काल में सदैव दो-एक अध्यापक ऐसे प्राप्त हुए, जो योग्य थे और उनकी कृपा भी इन पर रही। यह समय १९३६ से १९५७ के मध्य का था ऐसे में इन्हें अनुभव हुआ कि वह अपने अध्यापकों व्दारा आगे बढ़ रहे हैं।

**प्राथमिक स्कूल जीवन –**

कलाम का ५ वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम में पंचायत प्राथमिक स्कूल में दीक्षा संस्कार हुआ था। इनके शिक्षक अय्यर इनकी ओर विशेष ध्यान देते थे क्योंकि वे कक्षा में अपने कार्य में बहुत अच्छे थे।

**प्रेरणा –**

अब्दुल कलाम एयरोस्पेस टेक्नॉलॉजी में आए, तो इसके पीछे इनके पाँचवी कक्षा के अध्यापक सुब्रह्मण्यम अय्यर की प्रेरणा थी। वे उनके स्कूल के अच्छे शिक्षको में से एक थे।

**उच्च शिक्षा – (अब्दुल कलाम के शब्दों में)**

एक दिन कलाम ने अध्यापक श्री सुब्रह्मण्यम अय्यर से पूछा कि "श्रीमान मुझे यह बताए कि मेरी आगे की उन्नति 'उड़ान' से संबंधित रहते हुए कैसे हो सकती है ? तब उन्होंने धैर्यपूर्वक जबाब दिया कि मैं पहले आठवी कक्षा उत्तीर्ण करुँ, फिर हाईस्कूल । कॉलेज में मुझे उड़ान संबंधित शिक्षा प्राप्त होगी। यदी मैं ऐसा करता हूँ तो, उडान विज्ञान के साथ जुड़ सकता हूँ। इन सब बातों ने मुझे जीवन के लिए एक मंजिल और उद्देश भी प्रदान किया। जब मैं कॉलेज गया तो मैंने भौतिक विज्ञान विषय लिया। जब मैं अभियांत्रिकी शिक्षा के लिए मद्रास इंस्टीट्युट ऑफ टेक्नॉलॉजी में गया तो मैंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चुनाव किया। इस प्रकार मेरी जिन्दगी एक रॉकेट इंजिनियर एयरोस्पेस इंजीनीयर और तकनीकी की ओर उन्मुख हुई और अंत में मैंने अपने व्यवसाय का चुनाव कर लिया।"

कलाम ने प्रोफेसर दोदात्री आयंगर, के कक्षा में आधुनिक बीजगणित सांख्यिकी और कॉम्प्लेक्स वेरिएबल्स का अध्ययन किया। १९५२ में कलाम ने एक अद्धितिय व्याख्यान दिया, जो भारत के प्राचीन गणितज्ञों एवं खगोलविज्ञान के संबंध में था। इस व्याख्यान में इन्होंने भारत के चार गणितज्ञों एवं खगोलविज्ञों के बारे में बताया था, जो इस प्रकार थे आर्यभट्ट, श्रीनिवास रामानुजन, ब्रह्मगुरल और भास्कराचार्य।

**कार्यक्षेत्र –**

१९६२ में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये।

डॉ. अब्दूल कलाम को प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रुप में भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल है । जुलाई १९८० में इन्होंने रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित किया था । इस प्रकार भारत आंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब का सदस्य बन गया । इसको लॉन्च व्हीकल प्रोग्राम को परवाना चढाने का श्रेय भी इन्हें प्रदान किया जाता है । डॉ. कलाम ने 'गाईड्ड' मिसाईल को डिजाइन किया । इन्होंने अग्नि एवं पृथ्वी जैसी मिसाइल्स को स्वदेशी तकनीक से बनाया था। डॉ. कलाम जुलाई १९९२ से दिसंम्बर १९९९ तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहगार तथा सुरक्षा शोध और विकास विभाग के सचिव थे । डॉ. कलाम ने भारत के विकास स्तर को २०२० तक विज्ञान के क्षेत्र में आत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की ।

**व्यवसायिक परिचय–**

कालान्तर में डॉ. कलाम को 'इंडियन कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च' की ओर से साक्षात्कार के लिए बुलावा आया । साक्षात्कार अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई ने खुद लिया । इस के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिती में रॉकेट इंजीनियर के पद पर उन्हें चुन लिया गया । भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिती में इनका काम 'टाटा इंस्टीट्युट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च' के कम्प्युटर केंद्र में शुरु किया । सन १९५२ में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिती ने केरल में त्रिवेंद्रम के पास थुंबा नामक स्थान पर रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र स्थपित करने का फैसला किया । थुंबा को इस केंद्र में काम के लिए सबसे उपयुक्त स्थान के रुप में चुना गया था, उसके बाद शीघ्र ही डॉ. कलाम को रॉकेट प्रक्षेपण से जुड़ी तकनीकी बातों का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए अमेरिका में नेशनल एयरोनॉटिक्स और स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन यानी नासा भेजा गया । वहाँ से लौटने के बाद २१ नवंबर १९६३ को भारत का (**Nike Apache**) नाम का पहला रॉकेट छोडा गया । ८ अक्तुबर १९७२ को उत्तर प्रदेश में बरेली एयर फोर्स स्टेशन पर इस प्रणाली का सफलतापूर्वक परिक्षण किया गया । १८ जुलाई, १९८० की सुबह आठ बजकर तीन मिनट पर श्रीहरिकोटा रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र से एस.एल.व्ही-३ने सफल उड़ान भरी। इस परियोजना की सफलता ने डॉ. कलाम को राष्ट्रीय पहचान दी। इस के लिए उन्हें भारत सरकार व्दारा २६ जनवरी १९८१ को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया ।

**मिसाइल कार्यक्रम के जनक –**

डॉ. अब्दुल कलाम ने जमीन से जमीन पर मार करने वाले मिसाइल प्रणाली को 'पृथ्वी' और जमीन से हवा मार करने वाली प्रणाली को 'आकाश' और 'त्रिशूल' नाम दिया गया। Anti tank मिसाइल परियोजना को 'नाग' नाम दिया गया । २७ जुलाई, १९८३ को आय.जी.एम.डी.पी. की औपचारिक रुप से शुरुआत की गई । फरवरी १९९८ में भारत और रूस के बीच समझोते के अनुसार भारत में 'ब्रह्मोस प्राइवेट लिमीटेड' की स्थापना की गई ।

**राष्ट्रपति पद पर –**

डॉ. अब्दुल कलाम भारत के ग्यारहवे राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे । इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्पित एन.डी.ए. घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था । १८ जुलाई, २००२ को डॉ. कलाम को नब्बे प्रतिशत बहुमत व्दारा भारत का राष्टपति चुना गया था और इन्हें २५ जुलाई २००२ को संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति की शपथ दिलाई गई । उनके व्दारा लिखी गयी पुस्तके बहुत प्रिय रही हैं । वे अपनी किताबों की रॉयल्टी का अधिकांश हिस्सा स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद में दे देते थे। विज्ञान तथा प्रोयोगिकी के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें कईं पुरस्कार मिले हैं । इनमें से कुछ पुरस्कारों के साथ नकद राशियाँ भी थी। वह इन पुरस्कार राशियों को परोपकार के कार्यों के लिए अलग रखते थे । वह प्रभावित लोगों को राहत पहुँचाने के लिए डी.आर.डी.ओ. के नियंत्रण में मौजूद सब संस्था को एकत्रित करते थे ।

**सम्मान और पुरस्कार –**

डॉ. कलाम को अनेक सम्मान और पुरस्कार मिले हैं -

१. इंस्टीट्युशन ऑफ इंजीनियर्स का नेशनल डिजाइन अवार्ड.
२. एयरोनॉरिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया का डॉ. बिरेन रॉय स्पेस अवार्ड.
३. एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया का आर्यभट्ट पुरस्कार.
४. विज्ञान के लिए जी.एम. मोदी पुरस्कार
५. राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

डॉक्टर अब्दुल कलाम ऐसे तीसरे राष्ट्रपति हैं जिन्हें 'भारतरत्न' का सम्मान राष्ट्रपति बनने से पूर्व ही प्राप्त हुआ है, अन्य दो राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन और डॉ. जाकीर हुसेन हैं । यह प्रथम वैज्ञानिक हैं जो राष्ट्रपति बने हैं और प्रथम राष्ट्रपति भी हैं जो अविवाहित हैं ।

**अंतिम समय –**

अंतिम समय में डॉ. कलाम काशी हिन्दु विश्वविद्यालय भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद तथा भारतीय प्रबंधन संस्थान में आगंतुक प्रोफेसर रहे । 'अन्ना विश्वविद्यालय', चेन्नई में एयरो इंजीनियरिंग के प्रध्यापक के पद में नियुक्त रहे ।

पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का निधन ८३ वर्ष की अवस्था में २७ जुलाई २०१५ सोमवार को हो गया । कलाम आई. आई. एम्. शिलाँग में भाषण दे रहे थे। इसी वक्त उनकी तबीयत बिगड गई और ११ बजकर ३० मि. पर इनका निधन हो गया।

* * *

# आत्मविश्वासही सफलता का मार्ग है...

**के. एम. शेख**
एम.ए., व्दितीय वर्ष

यह दुनिया अमूल्य निधि का भण्डार है । आपको क्या चाहिए ? जो चाहिए वह मिलेगा । क्षमता के साथ-साथ तपस्या, धैर्य, साहस, विश्वास... तब कहीं जाकर आपको सब कुछ मिलता है । दृढ विश्वास और दृढ निश्चय के रास्ते में कोई चीज बाधा नहीं हो सकती, अपना आत्मविश्वासही अनेक विपत्तियों को तोड़ देता है, पहाडों को पीसकर रख देता है । हमने अपनी महान शक्तियों पर विश्वास नहीं किया । हमारे भीतर तमाम साहस एवं योग्यता विद्यमान है, आवश्यकता है केवल उन्हें सुप्तावस्था से जगाने की ।

यह वह शक्ति है जो हमारी आन्तरिक शक्ति का परीक्षण कर सकती है । हमारा आत्मविश्वास हमें उँचा काम करने को प्रेरित करता है क्योंकि वह हमारी आन्तरिक भावनाओं का अनुमान लगा सकता है । अगर हमें अपने ऊपर विश्वास है तो हमें बड़े- बड़े काम करने के अधिक अवसर प्राप्त होंगे । कभी ऐसा भी होता है कि किसी मनुष्य में काम करने की पूरी क्षमता होने के बावजूद भी वह काम नहीं कर सकता क्योंकि उसको अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं होता । किसी मनुष्य की भावी सफलता का अनुमान उसका विश्वास नाप कर ही लगाया जा सकता है । यदि उसका विश्वास दृढ नहीं है तो उसके भावी प्रयास भी वैसे ही होंगे । साधारणतः यह देखा गया है किपरिश्रमी एवं छोटी- छोटी बातों को ध्यान में रखकर चलने वाला मनुष्य विश्व में सफलता पाकर ही रहा । बड़े से बड़े कार्यों के लिए मजबूत और स्थायी नींव की आवश्यकता होती है, तथा वह नींव है ईमानदारी एवं श्रम की । ईमानदारी से कार्य करने वाला मनुष्य अपने को श्रेष्ठ और आनन्द का स्वामी बना सकता है । पीटर एक विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकारी था, उसने कठिन श्रम के व्दारा राजसिंहासन प्राप्त किया था । शायद ही इतिहास में किसी अन्य सम्राट ने ऐसा किया होगा, किन्तु उसने तो अपना राजसी ठाट-बाट एवं वेशभूषा उतारकर मजदूरोंवाली पोशाक पहन ली थी।

यदी आप यह समझते हो कि आप के पास प्रभु की दी हुई हर प्रतिभा है तो यह एक भ्रामक विचार है । इसे अपने मस्तिष्क से जितनी जल्दी हो सके निकाल दें । आप आज इसी समय यह संकल्प करें कि जो कुछ भी करेंगे, अपने पसीने की कमाई से करेंगे । श्रम का मूल्य आज से ही चुकता करना शुरु कर दें । निष्क्रिय बुद्धिमत्ता की इससे ज्यादा कोई कीमत नहीं जितनी जंगल में पैसों से भरी थैली की।

वैज्ञानिक विचार के अनुसार विज्ञान एवं कला को सीखने के लिए जितनी बुद्धिमत्ता की जरुरत है, उतनी आत्मविश्वास एवं श्रम की भी है । थॉमस एडीसन ने अपने जीवन का एक भी क्षण आराम या सुस्ती में नहीं गवाया था । आलस्य सफलता के मार्ग का सबसे बड़ा शत्रु है । काम के बिना हिम्मत बंद पड़ जाती है, स्फूर्ति शिथिल पड़ जाती है एवं आदमी मानव के उच्च आसन से गिरकर केवल भौतिक चिन्ह रह जाता है । इलियट ने कहा है - "परिश्रमी आदमी इस बात का हिसाब नहीं लगाते कि श्रेष्ठ शासन की व्यवस्था में कितने दिन लगेंगे । बिना काम किये किसी भी उपलब्धि की सम्भावना करना व्यर्थ है।"

अनेक युवकों का पढाई से मन चुराने का एक अन्य कारण अक्सर देखा जाता है कि युवक पढाई पूरी मेहनत और लगन से ही नहीं करते इसके कारण वह अपना लक्ष्य खो बैठते हैं, उनका संतुलन बिगड़ जाता है। जब युवक पूरे आत्मविश्वास से पढ़ाई करने लगे तो उनकी आन्तरिक शक्तियाँ जागृत हो कर असंभव कार्य को बिना किसी कठिनाई से पूरा कर देती है और अपने हर लक्ष्य में कामयाबी हासिल कर लेती है ।

कर्म अथवा मेहनत की महानता अपार है । उस से आँखों में ज्योति एवं मुखमण्डल पर तेज आता है, नस नाडियाँ दृढ होकर उनमें स्वस्थ रक्त परिभ्रमण करता है और विचार निर्मल होते हैं। नस नाडियों के रोगों को भगाने के लिए मेहनत रामबाण औषधि है । मानव स्वर्ग से धरा पर अवतरित ही इसलिए हुआ है कि वह कोई भी काम आत्मविश्वास से पूरा करे आत्मविश्वास से व्यर्थ की परेशानियाँ तथा कष्ट दूर हो जाते हैं ।

इसिलिए कुछ करो । कुछ कर दिखाओ । कुछ निर्माण करो। भले ही कार्य का परिणाम साधारण हो। मत सोचो कि परिणाम छोटा है । अपने आत्मविश्वास से कार्य को उच्च शिखर तक पहुँचाओ। श्रम को बाहर आने दो तथा हर एक कार्य करने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दो । अपनी मेहनत को तुच्छ या छोटा मत समझो । श्रम से भागो मत । जिन्होंने श्रम किया उन्होंने अपना भाग्य बदल डाला । जो निकम्मे बैठे रहे वे जीवन भर अभागे बने रहे ।

आत्मविश्वास के व्दारा कम शक्तिवाले व्यक्ति भी बड़े-बड़े काम कर लेते हैं क्योंकि वे भय, संदेह और अनिश्चय को जड़ से उखाड़ फेंकते हैं । निराशा से आशा की ओर बढ़ना, जीवन का सच्चा वरदान है । असफलताओं से सफलता के रास्ते खोज निकालना जीवन का वरदान है । निर्धन से धनवान बनना जीवन का वरदान हैं । ये सारे वरदान आपकी झोली में पड़े है, इनसे आज तक आप वंचित रहे है, तो महज इसलिए कि इन्हें समेटने का आपको ज्ञान नहीं ।

आपमें सब कुछ करने की क्षमता है, इसके लिए किसी साधन की नहीं- आत्मविश्वास और दृढ संकल्प की आवश्यकता है ।

* * *

# सविता सिंह की कविताओं में स्त्री- संवेदना

कु. अनिता विश्वनाथ सूर्यवंशी
एम.ए., द्वितीय वर्ष

सविता सिंह समकालीन हिंदी कवयित्रियों में अपनी एक अलग पहचान रखती है । इनकी रचनाओं में स्त्री संवेदना का स्वर प्रमुखता के साथ देखा जा सकता है । स्त्री जीवन से सम्बंधित चुनौतियों, मान्यताओं तथा विषमताओं को जिस प्रकार से कवयित्री सविता सिंह जी ने अपनी रचनाओं में चित्रित किया है । आज लगभग वैसा कम ही देखने को मिलात है । इनकी कृतियों में स्त्री विषयक तथ्यों को आधुनिक धरातल पर लाते हुए बड़ी सूक्ष्मता के साथ देखा जा सकता है । सविताजी नई सोच और नई वैचारिक दृष्टि के साथ नयी भाव सरिता और कुछ नयेपन को कविता में समेटते हुए अपने विचारों को उद्‌घाटित करती है, साथ ही स्त्री प्रसंगों को भी बड़ी पैनी दृष्टि से निहारती भी है । आप एक संवेदनशील कवयित्री होने के साथ- साथ एक अच्छी समीक्षक, आलोचक और अनुवादक भी है । आपके कई शोध आलेख राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं । हिंदी के अलावा आपकी अंग्रेजी कविताएँ भी प्रकाशित हो चुकी हैं ।

सविता सिंह व्दारा रचित दो काव्य संग्रह है :- १. अपने जैसा जीवन २. नींद थी और रात थी । ये दोनों ही काव्य संग्रह स्त्री विषयक नयी चुनौतियों और संघर्षों को आधुनिक धरातल पर लाने और उसकी जांच पड़ताल करने की भरपूर कोशिश करती है। सविता सिंह जी एक स्त्री हैं और वह स्त्री पीड़ा को अच्छी तरह महसूस भी करती है इसलिए इनकी कविताओं में स्त्री स्वानुभूति और सहानुभूति दोनों का दर्शन होना स्वाभाविक है। लगभग सारी कविताओं में स्त्री की आशा- निराशा, चेतन- अचेतन, नारी अस्तित्व आदि का चित्रण किया गया । पहला काव्य संग्रह 'अपने जैसा जीवन' मानव के आंतरिक एवं बाह्य संसार के ज्ञात- अज्ञात, परिचित-अपरिचित भावों के शाश्वत जगत भूमि पर लाने का प्रयास करता है । यह काव्य संग्रह स्त्री के विद्रोही स्वर और दासताँ की जंजीरों से मुक्ति का प्रखर शंखनाद करता है ।

काव्य संग्रह 'नींद थी और रात थी' में कवयित्री ने सपने को हकीकत में तबदील करने की कोशिश की है। वह सपने प्रतीक रुप में होते हुए भी यथार्थ रुप में चित्रित होते हुए दिखलाई पड़ते है । जिसमें स्त्री जीवन की मार्मिक घटनाओं को व्यवहारिक रुप में प्रस्तुत किया गया है। सविता सिंह जी एक स्त्री की तथ्यपूर्ण अनुभवातीत को बिम्बों और प्रतीकों के रुप में प्रस्तुत करती है । वे प्रतीक ऐसे हैं जो अभी तक अछूते रहे है। दृश्य और अदृश्य, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष इन सबके बीच में निहित जो प्रतीकात्मक चिंतन है वही चिंतन सविता सिंह की कविताओं का आधार बिंदु है । इनकी कविताओं के सन्दर्भ में साहित्यकार केदारनाथ सिंह जी का कहना है कि, यह एक ऐसा संकलन है जो प्रौढ मास्तिष्क और परिपक्व संवेदना के घोल से तैयार किया गया हैं । मुक्त दिमाग से लिखी गयी और, बृहत मुक्ति देने वाली कविताओं के लिए अपने जैसा जीवन पढ़ा जाना चाहिए। सविता सिंह जी की कविताओं का अध्ययन करने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि ये कविताएँ लेखिका के भोगे हुए यथार्थ जीवन की दास्तान को बयान कर रही है । यथार्थवादी अनुभव के कारण उसमें समाहित घटनाएँ प्रत्यक्ष मालूम नहीं पड़ती है...... जब प्रत्यक्ष दिखाई भी देती हैं तो उनका भोगा हुआ यथार्थ, भोगा हुआ सच, सच भी ऐसा जो बौद्धिक, तार्किक से कुछ नया सोचने, रचने का प्रयास करती हों । ये स्त्री तथ्यों को बड़ी ही गहरी संवेदनाओं से जोड़ती है, स्त्री मुद्दों की खोज में प्राचीन से आधुनिक परिदृश्य से साक्षात्कार करती हुई प्रतीत होती है। ऐसी कविता शायद एक स्त्री ही लिख सकती है लेकिन सविताजी की कविताओं में प्रचलित नारीत्व है जो दास्तान का घोर विरोधी है और स्त्री की मुक्ति का और भी गहरा पक्षधर है ।

सविता सिंह जी की कविताएँ नई सोच के साथ नई राहों की तलाश करती नजर आती हैं साथ ही स्त्री की आन्तरिक छटपटाहट, व्दंव्दात्मकता, आशा, आकांक्षा को भी व्याख्यायित करती है । एक तरफ से इसमें स्त्री की अस्मिता और अस्तित्व की कवायद की गई है और दूसरी तरफ स्त्री व्दारा बनाये हुए सिद्धांतों को स्वयं ही नकारते और अपनाते हुए दिखाया गया है । स्त्री विमर्श से तबरेज और स्त्री विचारों से प्रभावित होने के कारण, कहीं-कहीं कविताओं में सांस्कृतिक बोध को आत्यधिक प्रश्रय देने के कारण कविताओं में अतिक्रमण दिखाई देता है । शायद इसी अतिक्रमण की वजह से कविता में चित्रित स्त्री संघर्ष दम तोड़ती हुई दिखाई देती है। सविता सिंह जी ने स्त्री के माध्यम से परम्पराओं को तोड़ने और आधुनिकता को ग्रहण करने की कोशिश तो की है, परन्तु अंतर्मनाव्दंद्व की वजह से सारी सोच सपनों की तरह सपनों में ही विलीन दिखलाई पडती है । कवयित्री सविता सिंह इसी अंतर्मन की गुत्थम -गुत्थी से बाहर निकल नहीं पाती है । अधिकतर कविताएँ, दास्तान को उजागर करते हुए न्याय, शक्ति और अधिकार के लिए संघर्षरत स्त्री के अनुभवों, सपनों और जीवन की सामर्थ्य को चित्रित करती है। नई उम्मीद और नयी उमंगों के बीच सामाजिक - सांस्कृतिक विसंगतियों को नकारता और उसे एकदम से खारिज करना कवयित्री को प्रश्न के कटघरे में लाकर खड़ा कर देती है । यथार्थ और व्दंव्द दोनों साथ-साथ चलते हैं लेकिन जिस प्रकार से मानवीय मूल्यों के प्रति उनका विद्रोह, आक्रोश झलकता है वह अंततः सपनों में ही खोता नजर आता है ।

* * *

# डॉ. परमानंद पांचाल की हिंदी सेवाएँ

**प्रा. गडाख दीपाश्री**
सहाय्यक प्राध्यापिका

डॉ. परमानंद पांचाल दक्खिनी हिंदी साहित्य के ख्यातिप्राप्त विद्वान, लिपि विशेषज्ञ और एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। पिछले चार दशकों से हिंदी भाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षों, ज्ञान, विज्ञान, पर्यटन, संस्कृति और इतिहास पर निरन्तर लेखन व्दारा लेख और निबंध की विधा को नया आयाम दिया है। इन्होनें देश और विदेश में देवनागरी के प्रचार-प्रसार हेतु अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया है। राष्ट्रीय एकता के लिए नागरी लिपि का प्रचार प्रसार इनका मिशन है।

जन्म – ४ जुलाई १९३० ई., ग्राम - सिरसली (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा – एम.ए., एल.टी., पी.एच.डी. (हिंदी)

सेवा –

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढाने में डॉ. पांचाल की प्रशंसनीय सेवाएँ रही है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार व्दारा इनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए इन्हें विशेष, रुप से सम्मानित किया गया था। वे आज भी भारत सरकार के कई मंत्रालयों की हिंदी सलाहकार समितियों और केन्द्रीय हिंदी समिती के सदस्य हैं।

**राष्ट्रपति भवन में :–**

डॉ. पांचाल ने राष्ट्रपति के विशेष कार्यअधिकारी (ओ.एस.डी.) (भाषा) के रुप में हिंदी की उल्लेखनीय सेवाएँ की। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी व्दारा देश और विदेश में दिए जानेवाले हिंदी भाषणों को तैयार करने के महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का बडी सफलता से निर्वाह किया। यह इतिहास में पहला अवसर था। जब राष्ट्रपति के मूल भाषण विदेशों में भी केवल हिंदी में ही होते थे और राष्ट्रपति भवन की अधिकारिक भाषा एक प्रकार से हिंदी बन गई थी। वहाँ जिस निष्ठा और परिश्रम से हिंदी को लोकप्रिय बनाया गया था, उसका वास्तविक श्रेय डॉ. परमानंद पांचाल की सेवाओं को ही जाता है।

**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय –**

हिंदी के परामर्शदाता रहे और हिंदी माध्यम से उच्च पाठ्क्रम तैयार करने में विशेष योगदान दिया।

**देवनागरि लिपि का प्रचार– प्रसार –**

देश और विदेश में देवनागरि लिपि को लोकप्रिय बनाने के लिए आचार्य विनोबा भावे के मिशन को पूरा करने में बड़ी निःस्वार्थ भावना से लगे हैं। वे हिंदी और देवनागरि लिपि के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं।

**साहित्य अकादमी के सदस्य :–**

वर्ष २००२-२००७ तक साहित्य अकादमी के सदस्य रहे।

**प्रकाशित साहित्य –**

हिंदी में २३ पुस्तकें और प्रमुखपत्र- पत्रिकाओं में ३०० से अधिक लेख प्रकाशित है।

इनकी कई पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित हैं। ८० वर्ष की इस आयु में भी निरन्तर लेखन कार्य में लगे हैं।

**हिंदी में प्रकाशित पुस्तकें :–**

१. हिंदी के मुस्लिम साहित्याकार - १९७१
२. दक्खिनी हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली - १९८५
३. दक्खिनी हिंदी : विकास और इतिहास - १९७७
४. कोहिनूर (लेख संग्रह) - १९८६
५. विदेशी यात्रियों की नजर में भारत - १९९२
६. भारत के सुन्दर व्दीप - १९९३
७. अण्डमान तथा निकोबार व्दीप समूह - १९९३
८. भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह और हिंदी - २००१
९. हिंदी भाषाः राजभाषा और लिपि - २००१
१०. भारत की महान विभूति, अमीर खुसरो - २००१
११. दक्खिनी हिंदी : इतिहास और शब्द सम्पदा - २००१
१२. सोहन लाल व्दिवेदी - २००५
१३. दक्खिनी हिंदी काव्य संचयन - २००८
१४. प्रयोजनमूलक हिंदी -
१५. हिंदी भाषाः विविध आयाम - २०१२

उर्दू से हिंदी में अनुवाद :-

१. जिगर मुरादाबादी - १९९१

२. मिर्जा मुहम्मद रफी सौदा - १९९५

३. गुफ्तगु फिराक गोरखपूरी - १९९९

४. शबनमिस्ताँ - १९९८

५. कहीं कुछ कम है (शहरयार) - १९९९

सम्पादित ग्रंथ:-

१. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार व्दारा पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित स्मरणिका १९९६

.कथा- दशक(कहानी संग्रह) १९९६

कृतियों पर शोध कार्य –

कुरुक्षेत्र तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालयों जैसे कई विश्वविद्यालयों में इनके साहित्य पर शोध कार्य भी सम्पन्न हो चुका है।

विश्व हिंदी सम्मेलनों में भूमिका :-

त्रिनिड़ाड़ एवं टोबेगो में आयोजित पाँचवे विश्व हिंदी सम्मेलन में डॉ. परमानंद पांचाल की भूमिका रही। इन्होनें इस अवसर पर विदेश मंत्रालय की ओर से प्रथम बार प्रकाशित स्मरणिका-१९९६ का कुशल सम्पादन किया और सम्मेलन की एक संगोष्ठी की अध्यक्षता की तथा बीज भाषण दिया।

८ वे हिंदी समेलन न्यूयॉर्क (अमेरिका) में देवनागरी लिपि सत्र में बीज भाषण।

विश्व हिंदी सचिवालय, मारिशस में हिंदी की वैश्विक और देवनागरी लिपि पर अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी मे बीज भाषण

९ वें विश्व हिंदी सम्मेलन, दक्षिण आफ्रिका में सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि पर व्याख्यान।

विदेशी यात्राएँ :-

फ्रांस, स्विटजर लैंड, स.रा. अमेरिका, पौलेंड, मैक्सीको, अर्जन्टीना, नेपाल, हाँगकाँग, त्रिनिडाड एवं डुबेगो तथा दुबई, मॉरिशस, दक्षिण अफ्रिका, तथा इंग्लैंड आदि।

* * *

## यह जिंदगी है...

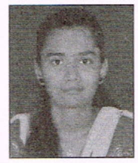

**डोंगरे श्वरी अजय,**

एफ.वाय.बी.कॉम.

फूल बनकर, खुशबू देना जिंदगी है।
दीपक बनकर, रोशनी देना जिंदगी है।
खुद के लिए तो हर कोई जीता है।
दूसरों के लिए जीना जिंदगी है।
हँसी के बदले, हँसी देना जिंदगी है।
रास्ते में काटे भले ही आए,
दु:ख दर्द सहकर चलना जिदगी है।
खुद के लिए तो चलना ही है।
दूसरों का साथ देना जिंदगी है।
खुद कड़ी धूप में रहकर,
दूसरों को छाँव देना जिंदगी है।
किस्मत की ठोकरे तो खानी ही पड़ेगी।
उसे पार करके आगे बढना जिंदगी है।
काँटो से प्यार करना जिंदगी है।
रिश्ते खूब मिलेंगे दुनिया में,
रिश्तों को उम्रभर निभाना ही, जिंदगी है।
जिंदगी तो सब जीते है,
दूसरों के लिए अपने प्राण देना, जिंदगी है।

## दूर जाएँगे इस दुनिया को छोड़कर

**तळपाडे शितल अशोक** – एम.ए.

मन में है प्यार, तुझे ना समझे
गुँगे बने शब्द प्यार के, वह भी तुझे ना समझे,
मैं हूँ अकेली मुझे राह दिखाना,
जोड़कर नाता मुझसे छोड़कर न जाना
मान भी जाओ पुरानी बात को छोड़कर,
दूर जाएँगे हम इस दुनिया को छोड़कर।।
जो चाहिए तुझे, वो माँगो अपने मन से
बिखर दूँगी सारी दुनियाँ मैं तेरे आँगन में,
सिर्फ तुम.....और तुम हि हो मेरे
मेरे आँचल में आना भीख बनके,
हो जाओ मेरे, सब रिश्तें तोड़कर
दूर जाएँगे हम इस दुनिया को छोड़कर।।
मरने के बाद... क्या है देखना...।
तु और मैं एक हि हो जाएँ
तु ना हो उस स्वर्ग मैं में क्यों जाऊँ
तु हो उस नरक में मुझे कैसा डर है।
तुम मुझे साथ दो हात से हात जोड़कर
दूर जाएँगे हम इस दुनियाँ को छोड़कर।।

# हिंदी उपन्यासों का परिचय

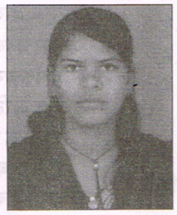

**कु. मधे सकूबाई तुकाराम**
एम.ए., हिंदी- प्रथम वर्ष

निम्नलिखित हिंदी गद्य साहित्य की अनेक विधाएँ हैं । इसमें कहानी, आलोचना, नाटक, एकांकी, उपन्यास, रेखाचित्र स्मरण, जीवनी, डायरी, आदि । इन सबमें उपन्यास श्रेष्ठतम विधा है जिसमें कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र- चित्रण संवाद या कथोपकथन देशकाल वातावरण, भाषा शैली आदि तत्वों के माध्यम से यथार्थ और कल्पना मिश्रित कहानी, आकर्षक शैली में प्रस्तुत की जाती है ।

इसके माध्यम से जिन-जिन कवियोंने उपन्यास लिखे हैं और उपन्यासों की रचना किस प्रकार की गई है इन उपन्यासकारों का परिचय :-

१) गोदान उपन्यास (प्रेमचंद) :-

गोदान प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास है इस उपन्यास में भारतीय किसान की संघर्षमयी गाथा प्रस्तुत की गई है जिसमें शोषण के विविध रुप उपलब्ध होते हैं। इस शोषण की भयंकरता के कारण इसकी कथा हिंदुस्थान के किसानी जीवन की कथोपकथा बन गई है ।

गोदान उपन्यास की प्रमुख कथा होरी नामक एक किसान की कथा है । इसका एकत्र परिवार अभी-अभी बटवारा करके अलग हुआ है। शोभा और हिरा होरी के दो भाई अलग अलग रहते है और होरी के परिवार में पत्नि धनिया है । दो बेटियाँ एक सोना और दूसरी रुपा है । बेटा गोबर है हिंदु धर्म में गाय को पवित्र माना जाता है । उसकी पूछ पकड़कर ही स्वर्ग जाया जा सकता है। अतः होरी की इच्छा थी गाय देने की, बचे दूध भी पीते हैं और वह अलग होने का व्यवहार पूरा करने के लिए अपनी गाय देता है । छोटे भाइयों को लगता है की इसने पैसे दबा लिये है और हमें निकाल दिया है इस इर्ष्या और क्रोध में आकर हिरा गाय को जहर देता है । हिरा घर छोड़कर भाग जाता है परिवार का भार होरी को उठाना पडता है। यह सज्जनता ही भारतीय किसान के दुःखों की जड़ है ।

इस बीच भोला की जवान विधवा बेटी झुनिया से होरी के बेटे का प्रेम हुआ था अब गर्भवती जुनिया को मजबूरन गोबर अपने घर ला रहा है । पर रात को उसे अपने घर की राह दिखाकर स्वयं लखनौऊ भाग जाता है। होरी की मनुष्यता पुनः ब्याही घर आई झुनिया को घर में रखता है और बहू का सम्मान देता है।

लेकिन होरी को ये सारे काम बहुत भारी पड़ते हैं । गाय के मरने का प्रायश्चित्त धर्म के लिए और झुनिया को इस तरह रखने का दंड बीरादरी के लोग उसे देते हैं दोनों से होरी कंगाल हो गया सारी फसल का अनाज जल गया । भोला गाय का पैसा मागने लगा । पैसा न मिलने पर होरी के बैल ले गया । इस तरह होरी किसान से मजदूर बन गया ।

होरी के इन प्रसंगों के अलावा ही कर्ज की समस्या तो हमेशा ही किसान के लिए गले का फाँस बनी रहती है । रास्ते में ही सावकार लोग सब वसूल कर लेते हैं । होरी मजदूर होकर गाँव के काम करता है और भूखे पेट काम करते-करते बेहोश हो जाता है । गोदान उपन्यास की नायक होरी एक आदर्श सामान्य व्यक्ति के रुप में चित्रित हुआ है। गोदान उपन्यास को राष्ट्रीय जीवन का महाकाव्य भी कहा गया है । गोदान उपन्यास प्रेमचंद की ही नहीं संपूर्ण विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है । जामिंदारों के व्दारा शोषित किसान अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए किस प्रकार संघर्ष करते हुए अपने जीवन की बली दे देता है । इसका मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया गया है ।

गोदान उपन्यास में समाज की सड़ी हुई व्यवस्था, किसानों की भोलीभाली धार्मिकता, आर्थिक विषमता के भयंकर, परिणाम, धर्म के ठेकेदार की स्वार्थ वृत्ती जमींदारों और कुंजीपतियों की कठोरता सरकारी कर्मचारियों के अत्याचार, सावकारों की हदयहीनता के प्रति उपन्यासकार के हृदय का विद्रोह तीव्र शब्दों में अभिव्यक्त हुआ है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने ग्रामीण दृश्यों के चित्रण करने में कौशल दिखाया है इस उपन्यास का नायक होरी सामंतों, धर्म के ठेकेदारों से कई महान है । वह समाज को संघर्ष की अपने आत्मसम्मान व आधिकारों की चुनौती देकर संसार से चला जाता है।

गोदान में शोषक और शोषित वर्ग के जीवन पर प्रकाश डाला है। शोषित वर्ग की दीन-हीन अवस्था का चित्रण उन्होंने एक ऐसे ढंग से प्रस्तुत किया है कि जिससे पाठक का ह्रदय उस वर्ग के प्रति सहानुभूतिशील हो उठता है साथ ही वह हमारे जीवन को सुखी बनाने के लिए एक महान क्रांति का संदेश भी प्रभावशाली शब्दों में देते हैं। यही संदेश प्रेमचंद की मृत्यु से पूर्व भारतीय जनता को दिला गया अंतिम दान 'गोदान' था।

२) मैला आँचल :– (उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु)

मैला आँचल लेखक फणीश्वरनाथ रेणु व्दारा लिखित एक उत्कृष्ट आँचलिक उपन्यास है इस उपन्यास का केंद्रिय स्थान पुर्णिया (बिहार) जिले का मेरीगंज गाँव है जिस गाँव में राजपुत, ब्राम्हण, कायस्थ और यादव आदि जातियों के लोग रहते हैं। जात-पात के आधार पर इस गाँव का विभाजन हुआ है, किसान, जमींदार, सामंत आदि वर्णोंकी समस्याँ बड़े प्रभावशाली ढंग से चित्रित हुई है। मेरीगंज गाँव भारत का प्रतिनिधि गाँव है। संकुचित दृष्टि जो भारतीय ग्रामीण जीवन की कमजोरी हैं, यहाँ भी देखने को मिलती हैं राजनितिक पक्ष और नेता आपस में लड़ते हैं। जिसका कारण वैयक्तिक व्देश के सिवा और कोई नहीं है।

'गाँव की ओर चलो' का नारा महात्मा गांधीजी ने भारत को आजादी मिलते ही दिया था। 'मैला आँचल' के गाँव में एक सरकारी अस्पताल केंद्र खुलता है। डॉ. प्रशांत डॉक्टरी की डिग्री लेकर विदेश न जाकर मेरीगंज जैसे छोटे से गाँव में आता है वही रहकर प्रशांत मलेरिया पर रिसर्च भी करना चाहता है। एक चर्खा सेन्टर खुलता है जहाँ मंगलदेवी मास्टरनी चर्खे के साथ आधुनिक स्त्री की छवी लेकर आती है चीनी (साखर), आनाज, तेल का सरकारी कोटा खुलता है। वह काँग्रेस के स्थानीय नेता बलदेव को मिलता है और समय- समय पर राजनीति में बदलता रहता है। राजनीति का बाल यह है कि सभी पार्टियाँ गाँवों तक फैलना चाहती है और सोशालीस्ट पार्टी का लिडर कालिचरण जब किसी गंभीर चपेट में आ जाता है तो उसी की पार्टी के शहरी लिडर कालिचरण को पकड़ लाने का षड्यंत्र करते हैं। इसे कालिचरन जान जाता है और भागकर डाकू बन जाता है।

गाँव के साधारण लोग नहीं समझ सकते कि उनके सही मार्गदर्शक कौन है। ग्रामलिडर के रुप में कॉंग्रेसी बन गए स्पेशालिस्ट कालिचरण और काम्युनिष्ठ डॉ. प्रशांत गाँव के फलक पर उपस्थित होते हैं। सभी राजनितिक दल जनता से बड़े-बड़े वादे करते हैं लेकिन साधारण जनता के हालत में कोई परिवर्तन नहीं होता। डॉ. प्रशांत के आगमन से मेरीगंज गाँव में नई चेतना आती है। अंग्रेज अफसर निल पर इस गाँव का नाम मेरिगंज रखा था। एक बहुत ही आधुनिक-सा लेकिन आधुनिकता का कोई लक्षण उस गाँव को स्पर्श तक नहीं कर सकता है। अस्पताल के बनने से गांव में नई हलचल पैदा होती है। डॉ. वहाँ वैज्ञानिक शोध के लिए आता है। लेकिन वह धीरे- धीरे गाँव के जीवन में रुचि लेने लगता है। 'मैला आँचल' एक गाव की कथा न रहकर एक देश की कथा बनती है। मेरीगंज में एक मंदिर है परंतु कथा में प्रेम का केंद्रीय स्वरुप डॉ. प्रशांत के साथ तहसिलदार विश्वनाथ प्रसाद की बेटी कमली का है। पूरी कथा रोमँटिक है लेकिन इस तरह मैला आँचल उपन्यास कथा की विराटता और गहराई दोनों को महाकाव्य जैसा गौरव प्रदान करता है।

३) पहला सूरज :– उपन्यासकार भगवतीशरण मिश्र :–

ऐतिहासिक उपन्यासकार भगवतीशरण मिश्रव्दारा लिखित पहला सूरज प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है इस उपन्यास का चरित्र नायक शिवाजी महाराज है यह संपूर्ण उपन्यास शिवाजी महाराज के जीवनपर आधारित है इस में शिवाजी महाराज के जीवन में घटीत घटनाक्रम को लिखा गया है। लेखक ने हिंदी जगत को हिंदवि स्वराज के गगन पर उदित सूरज याने शिवाजी महाराज के प्रकाशमान गरिमा का अवलोकन कराया है, जिसके चरित्र की प्रकाश किरनों नें संपूर्ण हिन्दवी स्वराज्य को प्रकाशमान कर दिया है। शिवाजी महाराज वह लोह पुरुष है, जिसके नाम मात्र से मुगलों के पसीने छूट जाया करते थे। संपूर्ण मुघल साम्राज्य पर छाएँ शिवाजी के आतंक की छवि का चित्रण लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है। लेखक ने तत्कालीन राजकीय वातावरण तथा सामाजिक स्थिति का स्पष्ट चित्रांकन 'पहला सूरज' नामक उपन्यास के व्दारा दिया है।

'पहला सूरज' हिंदुस्तान की धरती पर आशा की किरन बनकर आया जिसने मुगलों और विदेशी ताकतों को अपने शौर्य के बल पर नष्ट किया और अपनी तलवार के बल पर हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना की। शिवाजी महाराज का आदर्श समाज में स्थापित करना इस उपन्यास का परम उद्देश्य है। लेखक ने 'पहला सूरज' को अधिक समर्पक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए उत्कृष्ट भाषाशैली का चयन किया है। शिवाजी महाराज के जीवन का संपूर्ण घटनाक्रम चित्र की तरह उपस्थित करने में उपन्यासकार की वर्णनात्मक शैली प्रभावशाली रही है। इस उपन्यास की भाषा पात्रों के अनुसार है। प्रतिकात्मकता जैसे गुण विद्यमान हैं। साथ ही वह सरल एवं स्पष्ट भी है।

* * *

# हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका : ममता कालिया (सन १९४० ई.)

कु. मधे ताईबाई तान्हाजी
एम.ए., हिंदी-प्रथम वर्ष

लेखिका ममता कालिया का जीवन परिचय :-

ममता कालिया का जन्म २ नवंबर १९४० को वृंदावन में मिशन अस्पताल में हुआ। उनका सारा बचपन मथुरा में बीत गया। एक संपन्न परिवार में जन्म लेने के कारण ममता का बचपन सुखपूर्ण रहा। ममता की पढ़ाई मुंबई, पूना, इंदौर जैसे शहरों में हुई है। ममता ने एम.ए. की डीग्री प्राप्त करते ही दौलत कॉलेज दिल्ली में प्राध्यापक की नौकरी पायी। ममता का विवाह दिल्ली में रविंद्र कालिया से हुआ। ममता का स्वभाव अत्यंत हसमुख है। अत्यंत प्रतिभाशाली होने के साथ ही वे इमानदार भी हैं। ममता कालिया को कई नामों से पुकार सकते हैं। जैसे उपन्यासकार ममता, कहानीकार ममता, एकांकिकार ममता, कवयित्री ममता। ममता कालिया ने पहले कहानियाँ लिखी परंतु उसके बाद उन्होंने उपन्यास लिखना आरंभ किया। उन्होंने अधिकतर उपन्यास मध्य वर्गीय शिक्षित नारी और उनकी समस्या पर लिखे हैं।

नौकरी करनेवाली नारी की स्थिति, पति-पत्नी के प्रेमहीन संबंध आदि उनके मुख्य विषय रहे। ममता कालिया के 'बेघर', 'दर नरक', 'प्रेम कहानी', 'एक पत्नी के नोट्स' ये चारों उपन्यास पति-पत्नी के प्रेमहीन संबंधों पर आधारीत है। इस प्रकार एक नौकरी करनेवाली स्त्री उसका रोब जमानेवाला पति आदि को स्पष्ट किया है। ममता कालिया ने यद्यपि कविता लिखकर साहित्य क्षेत्र में पदार्पन किया था, फिर भी उन्हें अधिकतर कहानीकार के नाते ही जाना जाता है। उन्होंने लगभग ७५ कहानियाँ लिखी। उन्हें बचपन में पिता की नौकरी के बदली के कारण कई शहरों में घुमने का मौका मिला। हर शहर में मिले अलग-अलग अनुभवों के कारण उन्हें अपनी कहानियों के देशकाल को समझाने की सामग्री मिल गई। नौकरी के लिए भी वे कई शहरों में घूमी। शहर जीवन से और वहाँ की नौकरी करनेवाली नारी की समस्या, तकतलिफ से परिचित होकर उन्हीं अनुभवों को अपनी कहानियों में उतारा है। ममताजी के अब तक सात कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है- 'छुटकारा', 'सीट नंबर छ', 'एक अदब औरत', 'प्रतिदिन', 'जाँच अभी जारी है', 'उसका यवन', आदि चर्चित कहानियाँ हैं।

इस प्रकार ममता के कहानियों को देखने पर पता चलता है, ममता ने अधिक तर नारी को केंद्र में रखकर ही कहानियाँ लिखी है। नारी की समस्याएँ, उसे झेलने पड़े संघर्ष, आदि को उन्होनें चित्रित किया है। ममता सफल लेखनकारों को तीसरे स्थान पर रखती है। फिर भी उन्हें सफल कहानीकार के रुप में जाना जाता है।

लेखिका ममता कालिया तोक्यो विश्वविद्यालय के विदेशी भाषा अध्ययन विभाग के सम्मेलन तथा ओसाका विश्व विद्यालय के २०१० के अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में छह सदस्सीय प्रतिनिधि मंडल के साथ शामिल हुई थी। उन सम्मेलनों में उन्हें अनेक प्रकार के अनुभव हुए थे। उन्होंने अपने उन अनुभवों तथा वहाँ देखी हुई विभिन्न चीजों को शब्द रुप देने का काम 'यात्रा जापान' की इस पाठ के रुप में किया है।

'यात्रा जापान' की इस पाठ की संक्षेप में जानकारी इस प्रकार है। लेखिका यह सदस्यीय प्रतिनिधी मंडल के साथ दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय विमान स्थल नंबर २ से जापान के तोक्यो के लिए विमान से रवाना होती है। वहाँ इस प्रतिनिधि मंडल को ताक्यो विश्वविद्यालय के विदेशी भाषा अध्ययन विभाग के सम्मेलन तथा ओसाका विश्वविद्यालय के २०१० के आंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में भाग लेना है। तोक्यो के नरीता एयर पोर्ट पर विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि उनकी अगवानी करते है और निशिकासाई एडोकावा कू के सनपेटियो होटल में उन्हें ठहराते हैं।

तोक्यो विश्वविद्यालय के अतिथि प्रोफेसर सुरेश ऋतुपर्ण लेखिका तथा अन्य प्रतिनिधियों को पास के कलकत्ता रेस्तरां में ले जाते हैं। लेखिका को इस होटल की भारतीय खाद्य सामग्री और संगीत से लगता है जैसे वे भारत के शेरे पंजाब होटल में बैठे हों। वहाँ का सब कुछ भारतीय था। तोक्यो विश्वविद्यालय का विदेशी भाषा अध्ययन संस्थान सभागार जापानी छात्रों से भरा था। सब हिंदी में बात करने की कोशिश कर रहे थे। कुछ छात्राओं ने लेखिका से उनकी कुछ कहानियों पर भी प्रश्न किए। इस तोक्यो युनिव्हंसिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज (टफ्स) में लगभग ५० भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था है। हिंदी - उर्दू शिक्षण की यहाँ एक शताब्दी बीत गई है। संचालन करने वाली छात्रा धारा प्रवाह हिंदी बोल रही थी। छात्रों ने हिंदी में ही प्रश्न पूछे।

दोपहर के भोजन के पश्चात फॉरेन स्टडीज के निदेशक प्रोफेसर फुजिई ताकेशी तथा ऋतुपर्ण प्रतिनिधि मंडल को टफ्स के पुस्तकालय में ले जाते हैं। अत्याधुनिक चार-मंजिले पुस्तकालय के हर मंजिल पर विशाल वाचनालय है। इसमें कुल ६,१८,६१५ पुस्तकें हैं। बटन से अलमारियों से पुस्तक उपलब्ध होती थी और बटन दबाने पर अलमारी में चली जाती थी। इंडिक भाषा विभाग में उन्होंने हिंदी अवधी, ब्रजभाषा, राज्यस्थानी, भोजपुरी, पहाड़ी और मैथिली की

अनेक पुस्तकें देखी। लेखिका ने वहाँ १८०५ में प्रकाशित सिंहासन बत्तीसी के पन्ने भी पलटे। बुलेट ट्रेन से प्रतिनिधि मंडल के साथ लेखिका अगले दिन सेमिनार में पहूँची । प्रोफेसर ताकेशी, तोबियो तनाका, अकिरा ताकाहाशि के साथ मंच पर भारत सरकार के उच्चायुक्त विकास स्वरुप तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के निदेशक डॉ. अजय कुमार गुप्त भी थे। सत्र की अध्यक्षता छोटे कद के मिजोकामी कर रहे थे। वे बड़ी तेजी से हिंदी बोल रहे थे । वे हिंदी जापानी के मध्य सेतु थे। उन्होंने ३०० हिंदी फिल्मी गानों का संकलन और अनुवाद किया है। विकास स्वरुप ने लोगों का परिचय कराया। वे लेखक भी हैं। इनकी पुस्तक पर ऑस्कर विजेता विश्वप्रसिद्ध फिल्म ' स्लमडॉग मिलेनियर' बनी है।

लेखिका और उनके साथियों को तोक्यो युनिर्व्हसिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज के अधुनातम पुस्तकालय में अलमारियों से पुस्तकें प्राप्त करने और उन्हें पुनः स्थान पर रखने की विद्युतचलित व्यवस्था देखने को मिलती है । इसके अलावा उन्हें इस पुस्तकालय में हिंदी, अवधी, ब्रजभाषा, राज्यस्थानी, भोजपुरी, पहाड़ी (कुल्लू) और मैथिल भाषा बोली की पुस्तकें भारी संख्या में मिलती हैं। वे वहाँ की मोनोरेल, स्वचालित रेल तथा लांच आदि का भी आनंद लेते हैं। उन्होनें हवा में जगमगाती लहराती नगरी देखी और अमरिका की स्टैच्यु ऑफ लिबर्टी का प्रतिरुप देखा।

* * *

## अब्दुल कलाम

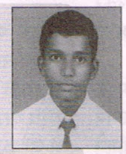

**तुषार दत्तात्रय ढोले**
इयत्ता १२ (विज्ञान), अ

जब पृथ्वी पर था अंधेरा अज्ञानका,
१९३१ में हुआ सबेरा विज्ञानका,
भारत की तकदीर बदलने के लिए,
दिया उन्होंने युवा शक्ति को नारा।।१।।
हम भारतवासी है बड़े भाग्यवान,
क्योंकि भारत के थे अब्दुल कलाम,
जिन्होंने दिये हमारे पंखों में प्राण,
वही प्यारे अब्दुल कलाम, ।।२।।
उनकी प्रेरणा थी सदैव हमारे लिए,
उनका जीवन भी था हमारे लिए,
प्राण भी दिए हमारे लिए,
डॉ. अब्दुल कलाम महान है हमारे लिए ।।३।।
नाम लेता है उनका कोई मुखपर,
प्रेरणामय जीवन होता है सुखकर,
क्योंकि यह असर हे हमारे अब्दुल कलाम का,
हिंदुस्थान के प्यारे मिसाईल मॅन का।।४।।
लेकर आदर्श हम उनके,
भारत महासत्ता बनेगा,
अब्दुल कलाम जी के नाम से,
भारत जग में चमक उठेगा।।५।।

## एक थी लड़की...

**कु. बनसोडे रचना दिनेश**
१२ विज्ञान, अ

एक लड़की थी...... बहुत ही प्यारिसी थी....
सबसे अलग उसकी भी एक दुनिया थी...
थोडी अलग तो थी, पर शायद उसमें
कुछ तो बात थी....
थोडी सी अकडू थी, शैतान थी,
पर दिल को छू जाती थी....
थी एक लड़की,जो सपनों की परियोंसे,
भी ज्यादा ही खूबसूरत थी....
उसका रुप और चेहरे पर की हँसी
सारी तकलीफे दूर करती थी..
दिल चाहता था कि, वह पास आए,
और पास आती तो लगता कभी दूर ना जाए....
ऐसी थी वह लडकी,
जिससे मैं मन ही मन प्यार करता था,
उसकी एक झलक के लिए
दिनरात यूँही भटकता था....
पर वो मिलने पर, कभी भी उसे अपनी
दिल की बात नहीं बता पाता था...
बहुत हिम्मत जुटाकर उसे अपनी दिल
की बात कहनेवाला था... कि मैं तुम्हें
जी-जान से चाहता हूँ.... पर अफसोस
मुझे देर हो गई शायद.... मेरे कहने से
पहले हैं कोई और उसे ले गया ।
और में सिर्फ रोता रहा..... रोता रहा...
आज, भी सोचता हूँ, कि कैसी होगी
वह.... क्या जैसे पहले थी वैसे ही
या उससे और भी ज्यादा खूबसूरत ।
पर, अब सोचने से क्या फायदा...
सिर्फ एक ही खयाल मन मैं आता है.....
एक थी लड़की.... जिसे मैं प्यार करता था.....
खुद से भी ज्यादा....

# संत कबीरदास के विचारों के माध्यम से समाज परिवर्तन

**तळपाडे शितल अशोक**
एम.ए., हिंदी

संत कबीरदास भक्तिकाल की संत ज्ञानाश्रयी शाखा तथा निर्गुण भक्तिधारा के प्रवर्तक माने जाते हैं। कबीर का जन्म एवं मृत्यु आदि के विषय में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित है। जनश्रुती के अनुसार इनका जन्म विधवा ब्राह्मणी की कोख से हुआ था। जो लोकलाज के कारण अपने इस शिशु को लहराते तालाब के निकट छोड़ गई थी। भाग्य से जुलाह दम्पति निरु और निमा वहाँ से गुजर रहे थे। उन्होंने इस बालक को उठा लिया और इसका पालन पोषण किया और इसका नाम कबीरदास रखा। कबीर का जन्म स. १४५५ में तथा मृत्यु सं. १५७५ में मगहर में हुई। रामानंद कबीर के गुरु है। कबीर के परिवार के संबंध में अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। कहते हैं, उनकी पत्नी का नाम लोई था, तथा उनके पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। कबीर का मन गृहस्थी जीवन में नहीं लगा। वे आजीवन एक फक्कड़ के रुप में समाज सुधारक और भक्ति और ज्ञान का उपदेश करते रहें। जब इनकी मृत्यु १५७५ में मगहर में हुई तब इनके दाहसंस्कार को लेकर हिंदु मुस्लिम में विवाद हुआ। हिंदु इन्हें जलाना चाहते थे और मुसलमान इनको दफनाना। इस घटना को लेकर लोकविश्वास है की इस झगड़े के समय कबीर का मृत शरीर लुप्त हो गया था और वहाँ पर सिर्फ फूल रह गये थे।

कबीर निर्भिक, उदार, सत्यवादी, अहिंसावादी, प्रेम के समर्थक, बाह्यडम्बर विरोधी, क्रांतिकारी समाजसुधारक थे। उनमें साहस एवं विश्वास था। वे तत्कालीन शासक सिकंदर लोदी के सामने झुके नहीं और न हिंदु मुस्लिमों के रोष से विचलित हुए।

कबीर पढे-लिखे नहीं थे। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि- 'मसि कागद छूयौ नहि कलम गहिं नहिं हाथ' परंतु उन्होंने दूर - दूर के प्रदेशों की यात्रा करके, समाज और धर्म के रुपों का विस्तृत अध्ययन किया। इस अध्ययन के व्दारा प्राप्त ज्ञान को वे कभी खंडन-मंडन उपदेश, भक्ति के रुप में लोगों तक पहुँचाया करते थे। कबीर की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने उनकी मौखिक रचनाओं का संग्रह करके उसे ग्रंथ रुप में संकलित किया जो 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। बीजक के तीन भाग है- साखी, सबद और रमैनी।

कबीर ने निर्गुण निराकार परमात्मा को अनेक नामों से पुकारा है। जैसे अल्लाह, खुदा, रहीम, केशव, राम, गोविंद, हरि आदि। उनके राम दशरथ के पुत्र राम नहीं है बल्कि उनका ब्रह्म निर्गुण निराकार एवं अरुप है। उसके न मुख है, न माथा, न रुप है। वह पुष्पगंध से भी सूक्ष्म तत्व है। अतः वह घट-घटवासी है। उसे बाहर ढूँढने की आवश्यकता नहीं है।

कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब समाज अनेक बुराइयों से ग्रस्त था। छूआछूत, अंधविश्वास रुढियों का बोलबाला था और हिंदु-मुस्लिमों में दंगा-फसाद हो रहा था। धार्मिक पाखंड बढ़ रहा था। धर्म के ठेकेदार अपना स्वार्थ धर्म के आड़ में साध रहे थे। कबीर ने इसका डटकर विरोध किया और सभी क्षेत्रों में फैली सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। हिंदु- मुंस्लिम एकता के लिए उन्होंने दोनो धर्मों के पाखंडो का खंडन किया। कबीर ने हिंदुओं से कहा की तुम अपने को श्रेष्ठ मानते हो अपना घडा किसी को छूने नहीं देते परंतु तब तुम्हारी उच्चता कहाँ चली जाती है जब वेश्यागमन करते हो।

इसी प्रकार उन्होंने मुसलमानों के नमाज पर जोरदार प्रहार किया -

'कांकर पाथर जोरि कै मसजिद लई चूनाय।
ता चढि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।'

इस प्रकार कबीर ने धार्मिक पाखंड पर कड़ा प्रहार किया है।

कबीर ने बाह्यडम्बरों का खण्डन करते हुए रोजा, नमाज, छापा, तिलक, माला फेरना, मूर्तिपूजा, आदि का विरोध किया है। कबीर कहते है हिंदु अपने देवताओं को पूज- पूजकर मर गये, योगी जटाएँ बांधकर मर गये। मुसलमान हज यात्रा कर-करके मर गये परंतु इनमें से राम किसी को नहीं मिला -

'देव पूजि हिंदु मुए, तुरक मुए हज जाई
जटा बांधि योगी मुए, राम किनहु नहिं पाई।'

अंतः बाह्यडम्बरी में क्या रखा है बल्कि उन्होंने अंतरिक शुद्धता पर बल दिया है। कबीर ने अपने समय में फैली छुआछूत जाति-पाति का तीव्र विरोध किया है। कबीर के समय में समाज में छूआछूत जातिभेद के बंधन कठोर थे। ब्राम्हण वर्ग जाति अभिमान से ग्रस्थ था। अपने को ऊँचा और शूद्रों को नीचा मानकर उन्होंने समाज में जो छुआछूत प्रथा चला रखी थी उसका कबीर ने विरोध किया। वे कहते हैं कि ऊँचे कुल में जन्म लेने से कोई ऊँचा नहीं हो सकता। ऊँचा वह है जिसकी करनी अर्थात कर्म ऊँचा है।

'ऊँचे कुल का जनमिया, करनी उंच न होइ।'

कबीर पशुबली तथा हिंसा का विरोध करते हैं, जो धर्म के नाम पर की जा रही है। मुसलमान दिन में रोजा रखते है और रात को गाय की कुर्बानी देते हैं। इससे खुदा कैसे प्रसन्न हो सकता है। इसी प्रकार हिंदु भी पशुबली देते हैं। बकरी केवल पत्तियाँ खाती है। इस पाप के कारण बकरी की खाल खींची जाती है परंतु जो मनुष्य बकरी को खाते हैं। उनका क्या हाल होगा

'बकरी पाती खात है ताकी काढ़ी खाल
जे नर बकरी खात है, तिनको कौन हवाल'

अथवा

'दिन में रोजा रखत है राति हनत है गाय'

कबीर ने अपनी भक्तिभावना को अनेक रुपों में व्यक्त किया है। उन्होंने नामस्मरण, सदगुरु का महत्व देकर सदाचार पर बल दिया, अपने अहंकार को त्याग देने से भगवान की प्राप्ति संभव है। कबीर अवतारवाद का विरोध करते हैं।

इस प्रकार संत कबीरदास जी ने अपने विचारों के माध्यम से समाज में बदलाव लाने का प्रयास किया है।

* * *

## जीवन क्या है ?

**आरती राजेश उगले**
एफ.वाय.बी.कॉम.

किसने पूछा
जीवन क्या है ?
जीवन एक पहेली है
सुलझा सको तो जाने ।
जीवन एक रत्न है,
परख सको तो जाने ।
जीवन एक धारा है,
बह सको तो जाने ।
जीवन एक कलम है,
लिख सको तो जाने ।
जीवन एक भवन है,
रह सको तो जाने ।
जीवन एक इम्तिहान है,
पार कर सको तो जाने ।
जीवन एक मिश्री है,
बाँट सको तो जाने ।
जीवन सब कुछ है,
समझ सको तो जाने ।

## दिखेगा हमें

**तुषार दत्तात्रय ढोले**
इयत्ता- १२ वी (विज्ञान) अ

कल हो जाएँगे हम, कितने ही बड़े,
सफलता के व्दार पर, तैनात खड़े,
आयेगा गाँव हमारा, बहुत याद,
खेलता, कूदता बचपन दिखेगा हमें । ।।१।।
यादे बचपन की, है बहुतसी,
लगेगी हमें वे, सुख के जैसी,
सचमुच क्या थे, बचपन के वे दिन,
मुस्कुराता बचपन, दिखेगा हमें । ।।२।।
लगेगा एक दिन, फिर हमें,
आजाए हमारा, बचपन,
दोस्तों के साथ, करे लड़कपन,
गुजरा हुआ बचपन, दिखेंगा हमें । ।।३।।
अब सब कुछ बदल गया है,
हमें भी बदलना होगा,
गाँव में जाकर फिर
गाँव का विकास दिखेगा हमें । ।।४।।

## काश कि मैं तारे तोड़ती

**कु. गौरवी भरत वाकचौरे**
११ वी, सायन्स

काश ! कि मैं तारें तोड़ती
उड़ती-उड़ती बादल को छूती
चाँद पर बैठकर
ठंडी हवा पाती,
तारों को देखकर उसमें समा जाती
काश कि मैं तारे तोड़ती
पृथ्वी पर चलती चलती
तारों को छूती
बादलों का झूला बनाकर,
उन तारों को जो लाती
काश कि मैं तारे तोड़ती
उड़ती-उड़ती तारों को ले आती
उसे अपनी बातें बताती
अपने बस्ते में लाकर सबको,
और खूब नाम कमाती
काश कि मैं तारे तोड़ती
काश मैं यह सपना पूरा कर पाती
अपने तारें खुद तोड़ लाती
और उसमें से एक तारा
अपने माता-पिता के जन्मदिन पर
देती !

## वक्त नहीं...

**कु. देशमुख धनश्री सुनील**
१२ वी, विज्ञान अ

हर खुशी है लोंगों के दामन में
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं...
दिन रात दौड़ती दुनिया में
जिंदगी के लिए ही वक्त नहीं....
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके,
अब उन्हें दफनाने को भी वक्त नहीं...
सारे नाम मोबाइल में है ।
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं...
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं...
आँखों में है नींद भरी,
पर सोने के लिए वक्त नहीं...
दिल है गमों से भरा हुआ,
पर रोने को भी वक्त नहीं...
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े कि
थकने को भी वक्त नहीं...
पराये एहसानों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं....
तू ही बता ये जिंदगी,
इस जिंदगी में क्या-क्या होगा ,
कि हर पल मरने वालों को,
जीने के लिए भी वक्त नहीं...